

मन के जीते जीत सदा

दैनिक

● मुद्रण तारीख - 30-05-2016 ● अंक- 540 ● तारीख - 31 मई 2016, ज्येष्ठ कृष्ण - 10 ● मंगलवार ● उदयपुर ● कुल पृष्ठ-02 ● मूल्य-1 रूपया ● पृष्ठ-01

श्री सत्यसाई बाबा (अनमोल वचन)



हमारी संस्कृति के परम्परागत मूल्यों की स्त्रियां रक्षा करती हैं तथा राष्ट्र को एक सम खूटी पर रखती हैं। यदि वे असफल हुईं तो यह क्षाम होगा, न कि क्षेम—मेरा विश्वास करो। — श्री सत्य साई बाबा

अनमोल वचन

1. मनुष्य अपनी क्षमताओं की कभी कद्र नहीं करता, वह हमेशा उस चीज की आस लगाये रहता है जो उसके पास नहीं है। —हेलेन कलर
2. जिस व्यक्ति में सफलता के लिए आशा और आत्मविश्वास है, वही व्यक्ति उच्च शिखर पर पहुंचते हैं।
3. आत्मविश्वास सफलता का प्रमुख रहस्य है। —इमर्सन
4. आत्मविश्वासी कभी हारता नहीं, कभी थकता नहीं, कभी गिरता नहीं और कभी मरता नहीं।
5. जब तक आत्मविश्वास रूपी सेनापति आगे नहीं बढ़ता तब तक सब शक्तियाँ चुपचाप खड़ी उसका मुँह ताकती रहती हैं।
6. दृढ़ आत्मविश्वास ही सफलता की एकमात्र कुंजी है।
7. धर्म परमेश्वर की कल्पना कर मनुष्य को दुर्बल बना देता है, उसमें आत्मविश्वास उत्पन्न नहीं होने देता और उसकी स्वतंत्रता का अपहरण करता है। —नरेन्द्र देव

तेज गर्मी के बावजूद भी देश में बढ़ रही है विदेशी पर्यटकों की संख्या

देश में भले ही तेज गर्मी पड़ रही है, लेकिन इसके बाद भी टूरिस्ट्स का भारत आने का उत्साह कम नहीं हुआ है। पिछले कुछ महीनों से देश में विदेशी पर्यटकों की संख्या लगातार बढ़ रही है। यह संख्या अप्रैल में 10.7 फीसदी बढ़कर 5.99 लाख हो गई है। पिछले महीने अमेरिका से 12.24 फीसदी। ब्रिटेन से 9.58 फीसदी



विदेशी पर्यटकों ने भारत का रुख किया। मलेशिया, चीन, फ्रांस और ऑस्ट्रेलिया से भारत आने वाले विदेशी सैलानियों की तादाद 3 फीसदी रही। विदेशी पर्यटकों को दूसरे देशों के मुकाबले भारत में ज्यादा सुरक्षा का भरोसा नजर आ रहा है। उज्जैन का कुंभ मेला भी विदेशियों के आने की बड़ी वजह बना। हेल्थ टूरिज्म के लिहाज से भारत विश्व में उभरता देश बन गया

है। एशिया में भारत बड़े पर्यटन स्थलों में शुमार है।

अप्रैल में विदेशी सैलानियों को केरल, उज्जैन, हिमाचल प्रदेश, जम्मू-कश्मीर और पूर्वी भारत ज्यादा पसंद आए। मार्च में 12 फीसदी बढ़ोतरी पिछले साल मार्च के मुकाबले इस साल मार्च के दौरान भारत में विदेशी पर्यटकों की संख्या 12 फीसदी बढ़ी थी।

पर्यटन से मार्च में 18 फीसदी और अप्रैल में 15 फीसदी विदेशी मुद्रा में कमाई बढ़ी। कमजोर रुपए का असर डॉलर के मुकाबले रुपया कमजोर होने की वजह से भारत घूमना सस्ता हो गया है। ई-वीजा की सुविधा मिलने के कारण वीजा लेना भी आसान हो गया है। बानगी के लिए 60 फीसदी पर्यटक ई-वीजा का इस्तेमाल कर रहे हैं।

आखिर क्यों होते हैं माला में 108 मोती

पहला कारण है सूर्य की कलाएं :- माला के 108 दाने और सूर्य की कलाओं का गहरा संबंध है। एक वर्ष में सूर्य 216000 कलाएं बदलता है और वर्ष में दो बार अपनी स्थिति भी बदलता है। छह माह उत्तरायण रहता है और छह माह दक्षिणायन। अतः सूर्य छह माह की एक स्थिति में 108000 बार कलाएं बदलता है। इसी संख्या 108000 से अंतिम तीन शून्य हटाकर माला के 108 मोती निर्धारित किए गए हैं। माला का एक-एक मोती सूर्य की एक-एक कला का प्रतीक है। सूर्य ही व्यक्ति को तेजस्वी बनाता है, सूर्य ही एकमात्र साक्षात् दिखने वाले देवता हैं, इसी वजह से सूर्य की कलाओं के आधार पर मोती की संख्या 108 निर्धारित की गई है।



दूसरा कारण है राशियों की संख्या :- माला के दानों की संख्या 108 संपूर्ण ब्रह्मांड का प्रतिनिधित्व करती है। ज्योतिष के अनुसार सम्पूर्ण ब्रह्मांड को 12 भागों (राशियों) में विभाजित किया गया है। इन 12 भागों (राशियों) के नाम मेष, वृष, मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, धनु, मकर, कुंभ और मीन हैं। इन 12 राशियों में नौ ग्रह सूर्य, चंद्र, मंगल, बुध, गुरु, शुक, शनि, राहु और केतु विचरण करते हैं। अतः विचरण ग्रहों की संख्या 9 का गुणा 12 राशियों की संख्या में किया जाए तो संख्या 108 प्राप्त हो जाती है। ज्योतिष के अनुसार इसी संख्या के आधार पर जप की माला में 108 मोती होते हैं।

तीसरा कारण है नक्षत्रों की संख्या :- ऋषियों की मान्यता के अनुसार—एक अन्य मान्यता के अनुसार ऋषियों ने में माला में 108 दाने रखने के पीछे ज्योतिषी कारण बताया है। शास्त्रों के अनुसार कुल 27 नक्षत्र बताए गए हैं। हर नक्षत्र के 4 चरण होते हैं और 27 नक्षत्रों के कुल चरण 108 ही होते हैं। माला का एक-एक मोती नक्षत्र के एक-एक चरण का प्रतिनिधित्व करता है।

तम्बाकू एक धीमा जहर (विश्व तम्बाकू निषेध दिवस, 31 मई)

तम्बाकू एक धीमा जहर है जो सेवन करने वाले व्यक्ति को धीरे धीरे करके मौत के मुँह में धकेलता रहता है लोग जाने अनजाने में तम्बाकू उत्पादों का सेवन करते रहते हैं, धीरे धीरे शौक लत में परिवर्तित हो जाता है और तब नशा आनंद प्राप्ति के लिए नहीं बल्कि ना चाहते हुए भी किया जाता है एक शायर ने क्या खूब कहा है — कौन कमबख्त पीता है मजा लेने के लिए, हम तो पीते हैं क्योंकि पीनी पड़ती है! तम्बाकू उत्पादों का सेवन अनेक रूप में किया जाता है, जैसे बीड़ी, सिगरेट, गुटखा, जर्दा, खैनी, हुक्का, चिलम उत्पादों के तम्बाकू सेवन से नुकसान — तम्बाकू में मादकता या उतेजना देने वाला मुख्य घटक निकोटीन (निकोटीन) है यही तत्व सबसे ज्यादा घातक भी है इसके अलावा तम्बाकू में अन्य बहुत से कैंसर उत्पन्न करने वाले तत्व पाये जाते हैं धूम्रपान एवं तम्बाकू खाने से मुँह, गला, श्वासनली व फेफड़ों का कैंसर (माउथ, थ्रोएट एंड लंग

कैंसर) होता है दिल की बीमारियाँ (हार्ट डिजीज) धमनी काठिन्यता, उच्च रक्तचाप (हाई ब्लड प्रेशर) पेट के अल्सर (स्तोमच अलसर), अम्लपित (एसिडिटी), अनिद्रा (इंसोमनिया) आदि रोगों की सम्भावना तम्बाकू उत्पादों के सेवन से बढ़ जाती है

तम्बाकू की लत के कारण — कभी दूसरों की देखा देखी, कभी बुरी संगत में पड़कर कभी मित्रों के दबाव में, कई बार कम उम्र में खुद को बड़ा दिखाने की चाहत में तो कभी धुएँ के छल्ले उड़ाने की ललक, कभी फिल्मों में अपने प्रिय अभिनेता को धूम्रपान करते हुए देखकर तो कभी पारिवारिक माहौल का असर तम्बाकू उत्पादों की लत का कारण बनता है अधिकतर लोग किशोरावस्था या युवावस्था में दोस्तों के साथ सिगरेट, गुटखा, जर्दा, आदि का शौकिया रूप में सेवन करते हैं शौक कब आदत एवं आदत लत में बदल जाती है पता ही नहीं चलता और जब तक पता चलता है तब तक शरीर को बहुत

नुक्सान पहुँच चुका होता है धूम्रपान, जर्दा, खैनी आदि।

नशा छोड़ने के उपाय

1. नशा छोड़ने का मन से निश्चय करें।
2. यदि नशा एक बार में झटक से छोड़ना मुश्किल लगे तो धीरे धीरे मात्रा कम करते हुए छोड़ें।
3. सभी मित्रों, परिचितों को बता दें कि आपने नशा छोड़ दिया है ताकि वे आपको नशा

करने के लिये बाध्य ना करें।

4. डायरी लिखें कि आप कब और कितनी मात्रा में नशा करते हैं क्या कारण है जो आपको नशा करने के लिये प्रेरित होते हैं।

5. अपने पास सिगरेट, गुटखा, तम्बाकू, एवं माचिस आदि रखना छोड़ दें।

7. 50 ग्राम सौंफ एवं इतनी ही मात्रा में अजवायन लेकर तवे पर भूने, थोड़ा नींबू का रस एवं हल्का काला नमक डाल ले एक डब्बी में रखकर अपनी जेब में रख लें ल जब भी सिगरेट एवं तम्बाकू आदि की तलब लगे तो कुछ दाने मुँह में रख लें एवं चबाते रहे इससे तलब कम होगी।



उपनिषद् से

मनुष्य अपने मन को पवित्र बनाकर बन्धनमुक्त हो सकता है। मन भावनाओं का समुच्चय होता है। भावना — पवित्र करने से मन पवित्र हो जाता है।

—जीवन और अमय, पृष्ठ 20 शिवानन्द

जब तक शरीर स्वस्थ है और जब तक मृत्यु नहीं आती, तभी तक आत्मा के हित का कार्य कर लेना चाहिए, अन्यथा प्राणान्त होने पर क्या हो सकेगा?

—चाणक्य नीति

पुष्प में गन्ध, तिलों में तेल, काष्ठ में अग्नि, दूध में धृत और ईख में गुड़ रहने के समान ही शरीर में स्थित आत्मा (विश्वात्मा) को विवेक से देखें।

—चाणक्य नीति

ज्ञान हमें उस स्थिति पर ले जाता है जहाँ कामनाएँ शान्त हो जाती हैं।

—उपनिषदों की भूमिका, डॉ. राधाकृष्णन्

प्रमाद, आलस्य (विषय-विकार) और उलझन में पड़े मन से कहिए — उठो, जागो और श्रेष्ठ पुरुषों से सीखते हुए, साहस से सन्मार्ग पर आगे बढ़ो।

—जीवन और अमय, शिवानन्द

मनुष्य शरीर की आयु सुलभ नहीं है — वह दुर्लभ वस्तु है, उसे पाकर आत्मा को नीचे नहीं गिराना चाहिए। मनुष्य को चाहिए कि वह पुण्य — कर्म के अनुष्ठान द्वारा आत्मा के उत्थान के लिए सदा प्रयत्न करता रहे।

—महाभारत

आत्म — कल्याण के उद्देश्य की पूर्ति के लिए उच्च गुणों की आवश्यकता पड़ती है।

—मनुष्य में देवत्व का उदय, श्रीराम शर्मा आचार्य

यदि मैं ऊपर उठकर स्वर्ग पहुँचूँ तो तू वहाँ है। यदि मैं नरक में रहूँ, तो आश्चर्य है तू वहाँ भी है।

—भजन सहिता

मानव मन के बोल

होनहार बिरवान के होत चिकने पात



गतांक से आगे.....

आप कहोगे कि ये कैसे हो सकता है? भाव अच्छे बना लो। परिवार में यदि आपके चार पुत्र हैं और विवाह में उनको आवाज दी जायेगी तो चारों पुत्रों को ही दी जायेगी। सबसे पहले बड़े को दी जायेगी, कभी मत देखना कि अरे! बड़ा तो है, पर मेरा कहना तो नहीं मानता, नहीं बाबू नहीं — बड़ा है, पहला शुभनाम उसी का लिया जायेगा। उनके बाद में दूसरा, तीसरा बच्चा आपका कितना भी आज्ञाकारी हो, फिर भी प्रोटोकॉल में तीसरा, तीसरा ही है और चौथा—चौथा ही है। भरतजी का प्राकट्य “जगत भरण पोषण कर जोई, जाके नाम भरत अस होय” जो जगत का भरण करता है, पोषण करता है, तृप्ति करता है। थोड़े समय बाद जन्मे, प्रकट हुए। लेकिन फिर भी राम के छोटे भाई ही कहलाये। कभी दोषारोपण मत करना। मुझमें अक्ल ज्यादा है, बड़े भाई में अक्ल कम है, कभी ऐसा मत सोचियेगा। अपना ज्ञान बाँट दीजिये—यदि आप में अक्ल ज्यादा है तो, बड़े आदर सहित, बड़ी विनम्रता सहित, विवेकी बनकर, सत्संग से विवेकी बनकर अपना ज्ञान बाँट कर दूसरों की भी तृप्ति कर दीजिये। तो मैं निवेदन कर रहा था, प्रशान्त को मैंने कहा, फिर कल्पना ने पूछा—पापा—पापा अन्त्याक्षरी में क्या बोलूँगी?

गुरु गृह गये पठन रघुराई।

अल्प काल विद्या सबआई।(48)

आप बोलना, अल्पकाल में विद्या आ गई। आपश्री इसे पढ़ रहे हैं, मन लगाकर पढ़ना। ध्यान से पढ़ना, होम वर्क पूरा करना, गुरु जी को प्रणाम करना, विनम्रता रखना। बदमाशियाँ मत करना, चोरी कभी मत करना, जिन्दगी में झूठ कभी मत बोलना। इससे आपकी शोभा हो जायेगी। उसी दिन से दोनों बच्चों को लगन लगी, स्कूल से आते ही रामचरित मानस पढ़ने बैठ जाते, स्कूल जाने से पहले रामचरित मानस पढ़ रहे हैं, मैं तो धन्य हो गया— महाराज।

क्रमशः अगले अंक में ...

भाग्य किसे कहते हैं?

पूर्व जन्मों में या पूर्व समय में हमने जो भी कर्म किये, उन्हीं सब का फल मिलकर तो भाग्य रूप में हमारे सामने आता है। भाग्य हमारे पूर्व कर्म संस्कारों का ही तो नाम है और इनके बारे में एकमात्र सच्चाई यही है कि वह बीत चुके हैं। अब उन्हें बदला नहीं जा सकता। लेकिन अपने वर्तमान कर्म तो हम चुन ही सकते हैं। यह समझना कोई मुश्किल नहीं कि भूत पर वर्तमान हमेशा ही भारी रहेगा क्योंकि भूत तो जैसे का तैसा रहेगा लेकिन वर्तमान को हम अपनी इच्छा और अपनी हिम्मत से अपने अनुसार ढाल सकते हैं। हमारे पूर्व कर्म संस्कार जिन्हें हम भाग्य भी कह लेते हैं, मात्र परिस्थितियों का निर्माण करते हैं। जैसे हमारे जन्म का देश—काल, घर—व्यापार, शरीर—स्वास्थ्य आदि हमारी इच्छा से नहीं मिलता लेकिन उन परिस्थितियों का हम कैसे मुकाबला करते हैं, वही हमारी नियति को निर्धारित करता है। कालिदास, तुलसीदास, नेपोलियन आदि कितने ही नाम गिनाये जा सकते हैं जिन्होंने अपना भाग्य, भाग्य के सहारे छोड़कर धोखा नहीं खाया, वरन् कर्म के प्रबल वेग से सुनहरे अक्षरों में लिखवाया। वस्तुतः भाग्य तो हम सभी का एक ही है, जिसे कोई बदल नहीं सकता और वह भाग्य है कि हम सभी ने परम पद की, पूर्णता की प्राप्ति करनी है। जो कर्मयोगी हैं, पूरी दृढ़ता, हिम्मत और उत्साह से हंसते—खेलते सहज ही वहाँ पहुँचने का यत्न करेंगे। दूसरी ओर जो आलसी और तमोगुणी हैं, वह बचने या टालने की कोशिश करेंगे। लेकिन कब तक? आखिर चलना तो उन्हें भी पड़ेगा क्योंकि सचमुच भाग्य को कोई नहीं बदल सकता। हम सभी ने संघर्ष के द्वारा अपनी चेतना का विकास करना ही है, चाहे या अनचाहे। परमात्मा ने मनुष्य को इसीलिये तो सोचने—समझने की शक्ति दी है ताकि वह अपने पूर्व अनुभवों के आधार पर सही रास्ते का चुनाव कर सके और माया के चक्कर से निकल कर पूरी समझ के साथ पूर्णता के पथ पर आगे बढ़े। सुख तो स्वयं प्राप्ति में ही है, उधार के द्वारा भोजन—धन आदि तो मिल सकता है लेकिन सुख और संतोष नहीं। अब निर्णय लेने की बारी आप की है, अब नहीं तो कब? सुझाव इतना ही है—‘शुभस्य शीघ्रम्।

जीवन है अनमोल

एक दिन एक राजा और एक महात्मा की भेंट हुई। महात्मा जी आत्मा का प्रभुत्व बड़ा मानते थे, लेकिन राजा राज्य को

सर्वोपरि मानता था। इस पर विवाद चल पड़ा। साधु ने पूछा — यदि तुम रेगिस्तान में प्यास से मर रहे हो और कोई एक लोटे जल के बदले आधा राज्य माँगे, तो दोगे या नहीं? राजा बोला— देना ही पड़ेगा। यदि

प्राण निकल रहे हो और अच्छा करने के लिए कोई वैद्य आधा राज्य माँगे तो दोगे या नहीं? राजा बोला जरूर दे दूँगा। महात्मा जी हँस पड़े और बोले—जिस जीवन की रक्षा के लिए एक लोटे जल और थोड़ी दवा के लिए अपना राज्य दे सकते

हो, वह आत्मा से बड़ा तो है नहीं, फिर आत्मा की रक्षा के लिए, आत्मकल्याण के लिए बड़े से बड़ा त्याग भी स्वल्प माना जाना चाहिए। असाधन के त्याग में ही साधन का निर्माण है।

सम्पादकीय

जिस प्रकार जीवन के सम्यक् निर्वाह के लिए जीवन को एक सुनिश्चित दिशा की आवश्यकता होती है, ठीक उसी प्रकार जीवन की उपलब्धियों को स्थायित्व प्रदान करने के लिए यह आवश्यक है कि व्यक्ति अपनी वासनाओं और इच्छाओं पर नियंत्रण करे और मिल बाँटकर खाने में प्रसन्नता का अनुभव करे, परन्तु हम ऐसा नहीं करते हैं। यही कारण है कि हम न तो अपनी उपलब्धियों द्वारा सम्यक् रूपेण लाभान्वित हो पाते हैं और न उनको स्थायित्व प्रदान कर पाते हैं। इस प्रवृत्ति से उत्पन्न जीवन की आपा-धापी गलाकाट प्रतियोगिता एवं सर्वभक्षी जीवन पद्धति ने हमको अर्थ पिशाच एवं कामांध नर-पशु की कोटियों में खड़ा कर दिया है तथा मानवीय मूल्यों के प्रति हमारा किसी प्रकार लगाव नहीं रह गया है। किसी श्रेष्ठ जन ने उचित परामर्श दिया है कि हम यदि साधन का ध्यान रखकर ठीक प्रकार काम करेंगे तो सफलता अवश्य मिलेगी। कहने की आवश्यकता नहीं है कि अनेक प्रतियोगी केवल इस कारण सफलता का वरण नहीं कर पाते हैं क्योंकि वे अपने लक्ष्य को निर्धारित करते समय उपलब्ध साधनों पर विचार नहीं करते हैं। हमें अपनी सामर्थ्य के अनुसार साधन जुटाने पर विचार करना चाहिए और उनके परिप्रेक्ष्य में अपने प्रातव्य निर्धारित करने पर विचार करना चाहिए। हमारा लक्ष्य सह अस्तित्व मात्र न होकर सह जीवन होना चाहिए। हमारे विचार से सह अस्तित्व पर केन्द्रित विचारधारा ने हमें अन्य प्राणियों के योग-क्षेत्र के प्रति उदासीन ही नहीं, बल्कि पूर्णतः स्वार्थबद्ध भी बना दिया है। "मेरा पेट हाऊ और मैं न देऊँ काउ" कथन पर आधारित व्यक्ति अधिकतम भोजन करना चाहता है, जिससे वह इस सन्तोष की अनुभूति कर सके कि उसने अन्य व्यक्ति के हिस्से के भोजन का भी उपभोग कर लिया है। प्रचलित प्रवाद के अनुसार गधे को वैशाखनन्दन कहते हैं क्योंकि चारों ओर सूखी भूमि देखकर वह इस संतोष की अनुभूति करता है कि उसने सब घास उदरस्थ कर ली है। वृहद स्तर पर यह प्रवृत्ति आर्थिक शोषण के रूप में दिखाई देती है। यह प्रवृत्ति भ्रष्टाचार, चोरी, डकैती आदि समाज विरोधी दृष्टियों को जन्म देती है। जो व्यक्ति सब कुछ हड़प लेने को प्रयत्नशील बने रहते हैं, वे सदैव आशंका, भय एवं दुराव-छिपाव का जीवन व्यतीत करने को विवश होते हैं क्योंकि उनकी उपलब्धियाँ श्रम की सुदृढ़ शिला पर स्थापित नहीं होती हैं। अतः जिस समाज से हम कुछ प्राप्त करते हैं, उसका ऋण चुकाने का प्रयत्न हमें अवश्य करना चाहिये। ऐसी सोच रखने वाला व्यक्ति जीवन में निरन्तर आगे की ओर बढ़ता जाता है- पूर्व स्थिति को प्राप्त होकर दुःख एवं अपमान भोगने की आशंका उसको नहीं सताती है।

नारायण सेवा में हुई मेहंदी प्रतियोगिता



उदयपुर। नारायण सेवा संस्थान में ग्रीष्मकालीन प्रशिक्षण सत्र के दौरान निर्धन एवं निःशक्त बहनों के लिए रचनात्मक प्रशिक्षण संचालित किए जा रहे हैं। संस्थान संस्थापक डॉ. कैलाश मानव ने बताया कि इसी क्रम में गत दिनों को मेहंदी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसमें भाग लेकर प्रशिक्षुओं ने अपनी प्रतिभा का परिचय देते हुए मेहंदी से सुंदर कलाकृतियां बनाईं। निदेशक वंदना अग्रवाल ने प्रतिभागियों का उत्साहवर्धन कर, उनमें पुरस्कार वितरित किए।



व्यवहार है जीवन का राजमार्ग

(मानव धर्म शृंखला का चतुर्थ (4) पुष्प)
गतांक से आगे....

रिश्ते नाते को फूलों से
प्यार की माला सजाए
जीवन के इस आंगन में
खूशियों के दीप जलाए,
मेरे जीवन का आधार यही
मेरा प्यार यही परिवार यही (66)

मेरा प्यार यही परिवार है, परिवार भगवान ने बनाया है बाबूजी। ओ भाभीजी, आपका विवाह जिनसे हुआ, उनके प्रति धर्मनिष्ठ रहिये, एकनिष्ठ रहिये। यदि आपके पति के स्वभाव में कुछ कमजोरी है तो अपने गुणों से बढ़िया कर दीजिये। मैंने तो पढ़ा था कि एक जज साहब की बेटी थी, उसने कहा - पिताजी मेरा विवाह उनसे कीजिये, जो उत्साही हों, जो उमंगी हों, जो उद्यमी हों, परिश्रमी हों, सत्य बोलते हों, एकनिष्ठा रखते हों और एक साधारण से, झोपड़ी में रहने वाले युवक से जज साहब ने अपनी बेटी का विवाह कर दिया। पर उनकी बेटी ने उस जंगल में भी मंगल कर दिया, उस झोपड़ी में प्रकाश फैला दिया। सारे गाँव को सिलाई सीखा दी, उनको उद्यम सीखा दिये, गाँव की युवतियों को कम्प्यूटर सीखा दिया, इन्टरनेट सीखा दिया, ऐसा धर्म होना चाहिए। धर्म वह है जो हमारे कर्म में आ जावे, धर्म वह है जो हमारे व्यवहार में आ जावे। श्लोक हजारों याद हों तो बहुत बढ़िया, लेकिन जीवन कैसे जीना चाहिए? जिंदगी में कभी गंदे विचार मत लाना। गंदे विचार गंदे भाव लाते हैं और गंदे भाव गंदा काम करवाते हैं। इसीलिये जैसे ही कोई गलत विचार आवे, उसे रोक लेना और कहना मैं ध्यान करूंगा, मैं सद्भावना लाऊंगा।

अन्तर्मन में सद्भावों की,
पावन गंगा जब बहती,
काम, क्रोध की कलुषित रेखा,
नहीं एक क्षण को रहती।।(67)

खूब बटोरो... ज्ञान के मोती...

डॉक्टर सा. लोभ में आ गये... बुद्ध शरण गच्छामि
व्यसन से-बुरी लत से दूर

आपके पास ये पुस्तक इसीलिए हाजिर हो रही है कि आप इसको पढ़ते जावें, समझते जावें, चिंतन भी करते जावें, तनिक रूक कर अपना आत्मविश्लेषण भी करें। सफलता के सोपान का अर्थ केवल रूपया नहीं है। सफलता की सीढ़ियों का अर्थ है प्रेम, शांति, मन में उत्साह, उमंग, स्वयं उद्विग्नता नष्ट हो, ये द्वंद्वनष्ट हो, गीता जी में भगवान श्रीकृष्ण ने कहा- हे अर्जुन! जो उद्विग्न नहीं होता और दूसरों को उद्विग्न नहीं करता, ऐसा भक्त मुझे प्रिय है। बोलिये शांतिनाथ भगवान कीजय।

भईया राजा और भाभी जी,

बहूजी और सासू माता जी।

जेठानी और देवरानी जी,

प्यारी बहन और ननद जी।।

ज्ञान के मोती से झोली भर लो -

ज्ञान के मोती से झोली भर लो

और परिवार में बाँट दो।

धरती माता को प्रणाम कर,

सूर्यदेव को अर्घ्यदान दो।।(68)

क्रमशः

मुख्य कार्यकारी अधिकारी-कैलाश 'मानव'
मार्गदर्शक-प्रशान्त अग्रवाल,
जगदीश आर्य, देवेन्द्र चौबीसा
मार्गदर्शिका-कमलादेवी, वन्दना अग्रवाल
अध्यक प्रबन्धक-मोहन लाल गाडनी
संपादक-लक्ष्मीलाल गाडनी
संपादन अत्योगी-धनश्याम मिश्र नटौड

अध्यात्म में नवरत्नों की भूमिका

1. माणिक्यः-ये सूर्य से सम्बंधित ग्रह है ये सूर्य की कंपनशक्ति को बढ़ाने का काम करता है। सूर्य की कंपनशक्ति कम होने पर पेट के विकार(बीमारियाँ) हो जाती हैं। सूर्य की कंपनशक्ति को पूरा करने के लिए माणिक्य पहननेकी सलाह दी जाती है। गेहूँ इस ग्रह से सम्बंधित अन्न है।
2. नीलमः-नीलम अपने में अधिक कंपनशक्ति लिए होता है। इसलिए इसको धारण काने वाले को इसकी सही मात्रा का आंकलन करना आना चाहिए। यह शनि ग्रह से सम्बंधित रत्न है एवं इससे सम्बंधित फसल काला तिल है।
3. पुखराजः - यह बृहस्पतिग्रह से सम्बंधित रतन है। पुखराज को बृहस्पति ग्रह की कंपनशक्ति प्राप्त करने के लिए धारण किया जाता है। काला चना इससे सम्बंधित अन्न है।
4. हीरा :- हीरा रत्न को धारण शुक्र ग्रह वाले लोग करते है। इस रत्न को शुक्र ग्रह की कंपनशक्ति को पूरा करने के लिए धारण किया जाता है। यदि शुक्र सही जगह पर स्थित है तो ये मनुष्य को ऐश्वर्य, उच्च भाग्य प्रदान करता है। कहा जाता है कि इसे धारण करने से जननांग सम्बंधित परेशानियां दूर हो जाती है एवं गृहस्थ जीवन सुखमय हो जाता है।
5. मूंगा :- यह रत्न मंगल ग्रह की स्थिति को ठीक करने के लिए धारण किया जाता है। यह राजनितिक मामलों, आत्मशक्ति को बढ़ाने के लिए, प्रशासनिक क्षमता बढ़ाने के लिए धारण किया जाता है। मूंगे को सोने या ताम्बे में धारण किया जाता है इससे सम्बंधित अन्न साबुत अरहर है।
6. पन्ना :- पन्ना बुध ग्रह का रत्न है। यह हल्के हरे रंग का रत्न होता है इसे धारण करने से स्वास्थ्य लाभ, घर में खुशी आती है, गर्भवती इस्त्री के धारण करने से प्रसव पीड़ा कम होती है, मानसिक अशांति, रक्त संचार में सुचारुता आती है। इसकी कम्पन शक्ति की कमी होने पर हृदय रोग होने की भी आशंका रहती है। इससे सम्बंधित अन्न साबुत मूंग है।
7. लहसुनिया :- यह केतु ग्रह से सम्बंधित ग्रह है। केतु की कंपनशक्ति को पूरा करने के लिए इसे धारण किया जाता है। इसे धारण करने से सुख-समृद्धि, बहादुरी एवं बुरी आत्माओं से मुक्ति मिल जाती है। कुत्थी दाना इससे सम्बंधित धान्य है।
8. गोमेद :- यह राहु ग्रह का रतन है। गोमेद धारण करके कंपनशक्ति को पूरा किया जाता है। राहु की स्थिति ठीक न होने पर यह मानसिक विकार एवं मष्तिष्क में भ्रम उत्पन्न करता है, गोमेद इससे आराम प्रदान करता है भ्रम दूर करता है, जीवन में स्थिरता एवं सकारात्मक ऊर्जा प्रदान करता है। इससे सम्बंधित धान्य उड़द है।
9. मोती :- यह चन्द्रमा का रत्न है। यह मन- मष्तिष्क को स्थिरता प्रदान करता है, धारक की स्मरण शक्ति को बढ़ाता है। ज्योतिषानुसार सोमवार को इसे धारण करना चाहिए। इसका धान्य धान है।



औद्योगिक शहर - पाली

राजस्थान राज्य में स्थित पाली शहर को औद्योगिक शहर के नाम से भी जाना जाता है। यह पाली जिले का प्रशासनिक मुख्यालय है। यह प्रसिद्ध पर्यटक केन्द्र बाड़ी नदी के किनारे पर बसा है। पूर्व में इस जगह को पल्लिका और पल्ली नामों से भी जाना जाता था। प्राचीनकाल में यहाँ पर निवास करने वाले पालीवाल ब्राह्मणों की वजह से इस स्थान का नाम पाली पड़ा। यह स्थान अपने कपड़ा उद्योग के लिये जाना जाता है और प्राचीन समय से ही प्रमुख व्यापार केन्द्र रहा है।

यात्रा करने के लिए मंदिर की सरणी - यह जगह विभिन्न प्रकार के जैन मन्दिरों, किलों, बगीचों और संग्रहालयों के लिये प्रसिद्ध है। नवलखा मन्दिर पाली का एक प्रमुख तीर्थ स्थल है। इसे नवलखा जैन मन्दिर के नाम से भी जाना जाता है और यह अपने सुन्दर वास्तुकला के लिये प्रसिद्ध है। यह जैन मन्दिर 23वें जैन तीर्थाकर को समर्पित है। पाली के अन्य महत्वपूर्ण तीर्थस्थल परशुराम महादेव मन्दिर, चामुण्डा माता मन्दिर, सोमनाथ मन्दिर और हतुण्डी रता महावीर स्वामी मन्दिर हैं।
पाली के अन्य आकर्षण - मन्दिरों के अलावा पाली का बाँगर संग्रहालय भी उल्लेखनीय स्थल है। यह संग्रहालय शहर के पुराने बस स्टॉप के पास स्थित है। पर्यटक यहाँ ऐतिहासिक वस्तुओं, प्राचीन सिक्कों, शाही परिधान और गहनों के दुर्लभ संग्रह को देख सकते हैं। पर्यटक पाली शहर के केन्द्र में स्थित लखोटिया गार्डन भी जा सकते हैं। इस बगीचे में एक प्राचीन शिव मन्दिर है जहाँ भक्तों का ताँता लगा रहता है। पाली में कई सीढ़ीदार कुएँ हैं जिन्हें स्थानीय लोग बावड़ी कहते हैं। इनमें से हर सीढ़ी पर शानदार डिजाइन की सजावट होती है। सजोत पाली को एक लोकप्रिय आकर्षण है जहाँ पर वृहद स्तर पर हिना की खेती होती है। हिना एक पौधा है जिसके लेप का उपयोग शरीर के हिस्सों पर अस्थाई डिजाइन बनाकर श्रृंगार के लिये होता है। इसके अलावा निम्बो का नाथ, आदिश्वर मन्दिर और सूर्यनारायण मन्दिर यहाँ के प्रमुख प्रसिद्ध तीर्थ स्थल हैं। मरुस्थलीय क्षेत्र में स्थित होने के कारण पाली की जलवायु चिलचिलाती गर्मी के साथ बेहद शुष्क रहती है। गर्मियों का मौसम 46 डिग्री सेल्सियस के अधिकतम तापमान के साथ बहुत गर्म होता है।



सादर आमंत्रण

दिव्यांग, अनाथ, रांगी, विधवा, वृद्ध, वंचितजन एवं विपन्दिता की सेवा में सतत संभारत

नारायण सेवा संस्थान एवं सेवा परमो धर्म ट्रस्ट, उदयपुर

सहायक अध्यक्ष

श्री देवकुण्ड धाम, बद्रीनाथ में आयोजित श्रीमद् भागवत कथा

आयोजक

बृजभाव सेवा समिति एवं राधे-राधे सत्संग मण्डल, पटियाला, पंजाब

दिनांक: 6 से 12 जून 2016
प्रतिदिन सुबह 7 बजे से 12 बजे तक
विश्रांति सुबह 12 बजे से 1 बजे तक
शुभ रात 1 बजे से 4 बजे तक

स्थान: पंजाब चिंभ श्रद्धा, बद्रीनाथ, (उत्तराखण्ड)

कथा व्यास: **पुज्य बृजनंदन जी महाराज**
व्यस्य पौठ पर विराजमान होकर अपने मुखारविन्द में आज्ञाओं व समर्थी मधुरकाशी द्वारा संगीतमय कथा का अक्षरपाठ करावेंगे। आयोजकों से अनुरोध है कि सपरिवार ईष्ट मित्रों सहित पधारक श्रीमद् भागवत कथा का अक्षर पाठ उठावें।
स्वार्गतिक सम्पर्क सूत्र: 09230371115
संस्थान सम्पर्क सूत्र: 0294-6622222, 9649499999

निःशुल्क जन्म की सेवा-सर्वयोग के प्रति समर्पित

कैलाश 'मानव'
वैनेशिंग ट्रस्टी एवं संस्थापक
नारायण सेवा संस्थान

कमला देवी
कोषाध्यक्ष
नारायण सेवा संस्थान

प्रशान्त अग्रवाल
अध्यक्ष
नारायण सेवा संस्थान

वन्दना
निदेशिका
नारायण सेवा संस्थान

जगदीश आर्य
ट्रस्टी एवं निदेशक
नारायण सेवा संस्थान

देवेन्द्र चौबीसा
ट्रस्टी एवं निदेशक
नारायण सेवा संस्थान

भक्ति एवं सेवा के महायज्ञ में एक आहुति आपकी भी
लक्ष्यया सपरिवार अवश्य पधारें।